55

''मसीही कैसा दिखाई देता है?''

(12:14-16)

एक छोटे लड़के ने क्लासों और प्रवचनों में कई बार ''मसीही'' शब्द का इस्तेमाल होते सुना था, परन्तु उसे पता नहीं था कि इसका अर्थ क्या है। एक दिन उसने अपने पिता से पूछा, ''डैडी जी, मसीही क्या होता है?'' उसके पिता ने उसे बताया कि मसीही उसे कहते हैं, जिसका सम्बन्ध मसीह से हो और समझाया कि मसीही कैसे बना जाता है। लड़का अभी भी उलझन में लग रहा था, सो पिता ने कहा, ''मसीही व्यक्ति को एक विशेष प्रकार से जीवन बिताना होता है। मैं रोमियों 12 का अध्ययन कर रहा हूं और यह अध्याय इस बात की बड़ी अच्छी समीक्षा है कि अलग-अलग परिस्थितियों में मसीही को कैसे कार्य करना चाहिए। उन्होंने रोमियों 12:9-16 पर अपने नोट्स उठाए और पढ़ने लगे, ''मसीही व्यक्ति प्रेम करने वाला, निस्वार्थ, जोशीला, दृढ़, सहायता करने वाला, अनुग्रह करने वाला, सहानुभूति रखने वाला और दीन होता है।''[1] लड़के ने अपने पिता की बातों पर विचार करते हुए फिर पूछा, ''क्या मैंने कभी उसे देखा है?''

रोमियों 12:2 में पौलुस ने हर मसीही से *बदला हुआ* जीवन जीने का आग्रह किया। 9 से 16 आयतों में उसने बदले हुए जीवन के उदाहरण दिए कि मसीही व्यक्ति कैसा दिखाई देता है। ''प्रेम कराने की चुनौती'' शीर्षक के अधीन हमने 9 से 13 आयतों का अध्ययन किया। इस पाठ में हम अगली तीन आयतों पर चर्चा करेंगे। पौलुस की सूची में कुछ नया नहीं है। उसके पाठकों ने पहले भी ऐसी शिक्षाएं सुनी होंगी, परन्तु पौलुस उन्हें समझाना चाहता था कि ऐसा जीवन विश्वास से धर्मी ठहराए जाने का *स्वाभाविक परिणाम* होना चाहिए।

पौलुस के निर्देश आज भी उतने ही उपयोगी हैं जितने पहली सदी में थे। आर. सी. बेल्ल ने लिखा है, ''हमारी दिक्कत समझ की नहीं है, बल्कि इस वचन की बातों को मानने की है।''[2] हमारे वचनपाठ में ज़ोर दूसरे लोगों अर्थात साथी मसीही लोगों, अपने पड़ोसियों और मित्रों और यहां तक कि अपने शत्रुओं से हमारे सम्बन्धों पर है। इस वचन का अध्ययन करते हुए हम विशेष परिस्थितियों में ''मसीही कैसा दिखाई देता है'' को जानेंगे। हम में से हर किसी को पूछना चाहिए, ''जो लोग मुझे जानते हैं क्या उन्होंने कभी 'मसीही को देखा'?''

मसीही व्यक्ति अनुग्रह करने वाला होता है (12:14)

अपनी सेवकाई के दौरान यीशु ने अपने पीछे चलने वालों के साथ संसार के व्यवहार के बारे में कुछ चौंकाने वाली बातें कहीं। उसने अपने चेलों को बताया कि लोग ''सताएंगे और झूठ बोल बोल कर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बातें'' कहेंगे (मत्ती 5:11)। फिर, उसने कहा कि ''लोग तुम से बैर करेंगे, और तुम्हें निकाल देंगे, और तुम्हारी निन्दा करेंगे, और तुम्हारा नाम बुरा जानकर काट देंगे'' (लूका 6:22)। मसीही व्यक्ति जब अपने आप को ऐसी परिस्थितियों में पाता

है तो वह ''कैसा लगता'' है ? पौलुस ने कहा कि परमेश्वर के किसी बालक के साथ जब ऐसा व्यवहार होता है तो उसे *अनुग्रहकारी* ही होना चाहिए: ''अपने सताने वालों को आशीष दो; आशीष दो श्राप न दो।'' इन शब्दों में उस विषय का परिचय है, जिन्हें हम अध्याय की अन्तिम 5 आयतों में विस्तार देंगे (रोमियों 12:17-21)।

''आशीष'' *eulogeo* से लिया गया है जो उस शब्द का क्रिया रूप है जिससे हमें अंग्रेज़ी शब्द ''eulogy'' (गुणा अनुवाद) मिला है, जिसका मूल अर्थ ''अच्छी बात'' (*eu* [''भला'' या ''अच्छा''] के साथ *logos* [''वचन''] से)।[4] किसी को ''eulogize'' करने के अर्थ उसकी ओर से ''अच्छी बात कहना'' है। इस मामले में *eulogeo* का सम्बन्ध उन लोगों की ओर से जिन्होंने हमारे साथ दुर्व्यवहार किया *परमेश्वर* से ''अच्छी बात कहना'' है। ''श्राप'' (*ara* का क्रिया रूप [''श्राप देना''] *kata* से गहरा जाता है) का अर्थ कथित ''श्राप की बातें'' कहना नहीं[5], बल्कि ''आशीष'' का विपरीत है: इसका अर्थ अपने सताने वालों के ऊपर परमेश्वर के श्रापों को बुलाना है। CEV में आयत 14 का अनुवाद इस प्रकार हुआ है: ''जो कोई तुम से दुर्व्यवहार करता है, उनमें से हर किसी के लिए परमेश्वर से आशीष मांगो। उनके लिए उससे आशिष मांगो न कि उन्हें श्राप दो।'' इस आयत में यीशु की शिक्षा सुनाई देती है: ''जो तुम्हें श्राप दें, उन को आशीष दो: जो तुम्हारा अपमान करें, उन के लिए प्रार्थना करो'' (लूका 6:28; देखें मत्ती 5:44)।

मैं एक आपत्ति का अनुमान लगाता हूं: ''परन्तु यह तो असम्भव है!'' यह *कठिन* है, परन्तु *असम्भव* नहीं। यीशु ने क्रूस पर यही किया था जब उसने कहा, ''हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि यह क्या कर रहे हैं'' (लूका 23:34)। यही स्तिफनुस ने किया था। जब पथराव कर उसकी हत्या की जा रही थी, तब भी उसने प्रार्थना की, ''हे प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा!'' (प्रेरितों 7:60)। पौलुस ने यही किया था। उसने कुरिन्थुस के लोगों को बताया, ''लोग हमें बुरा कहते हैं, हम आशिष देते हैं'' (1 कुरिन्थियों 4:12)।

रोमियों 12:14 मुख्यतया परमेश्वर की संतान के रूप में सताए जाने पर केन्द्रित है, परन्तु इस आयत को दुर्व्यवहार की अन्य परिस्थितियों के लिए भी लागू किया जा सकता है। कई बार मसीही लोगों के साथ केवल इसलिए दुर्व्यवहार होता है, क्योंकि वे ऐसे संसार में रहते हैं जहां लोग उनके प्रति दयालु नहीं होते। ऐसी परिस्थितियों में, अविश्वासी लोग आम तौर पर श्राप देते हैं, परन्तु मसीही व्यक्ति आशीष देता है। जब दुर्व्यवहार हो (चाहे जिस भी कारण से हो), ''मसीही व्यक्ति कैसा लगता है ?'' मसीही व्यक्ति अनुग्रह करने वाला होता है।

मसीही व्यक्ति सहानुभूति करने वाला होता है (12:15)

मसीह के अनुयायी की एक और खूबी यह है कि उसे *सहानुभूति करने वाला* होना चाहिए। पौलुस ने लिखा, ''आनन्द करनेवालों के साथ आनन्द करो, और रोने वालों के साथ रोओ'' (आयत 15)। इस शिक्षा की साथी मसीही लोगों के साथ हमारे सम्बन्ध में विशेष प्रासंगिकता है। रोमियों 12 के पहले भाग में पौलुस ने ज़ोर दिया कि हम ''एक [आत्मिक] देह [कलीसिया] में बहुत से अंग हैं, ... आपस में एक दूसरे के अंग हैं'' (आयतें 4, 5)। कुरिन्थुस के लोगो, लिखते हुए, उसने कहा कि ''यदि [देह का] एक अंग दुख पाता है, तो सब अंग उसके साथ दुख पाते हैं;

और यदि एक अंग की प्रशंसा होती है, तो उसके साथ सब अंग आनन्द मनाते हैं'' (1 कुरिन्थियों 12:26)।

रोमियों 12:15 कलीसिया के सदस्यों के बीच निकटता को पहले से मान लेता है। इस निकटता को प्रत्येक सप्ताह अन्य मसीही लोगों के साथ केवल प्रभु भोज में भाग लेकर नहीं पाया जा सकता। इसे प्रत्येक सप्ताह कई बार आराधना के लिए इकट्ठे होकर हासिल नहीं किया जा सकता। यह बाइबल क्लासों तथा आराधना सेवाओं के पहले और बाद में एक दूसरे से बातें करने से भी नहीं मिल सकती। ये सब चीज़ें आवश्यक हैं, परन्तु आयत 15 कहीं अधिक की मांग करती है। ओक्लाहोमा क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी के एक शिक्षक ने अन्तर्मुखी होने को माना तौभी अपने छात्रों को बताया, ''हम स्वाभाविक रूप से निर्गामी हों या न, बाइबल हमें गहराई से लोगों के जीवनों में शामिल होने के लिए कहती है।''[6] हम जीवन की उन घटनाओं जन्म, विवाह तथा जनाज़ों जैसी घटनाओं में भाग लेकर एक दूसरे के निकट आते हैं जिससे हंसी और आंसू मिलते हैं।

ऐसी निकटता को हम मसीह की देह में वास्तविकता कैसे बना सकते हैं? मुख्य शब्द ''सम्भाल'' और ''बांटना'' है। हमें मसीह में अपने भाइयों और बहनों के जीवनों में होने वाली बातों की *सम्भाल* करना आवश्यक है। फिर हमें अपने जीवनों में आने वाली भलाई और बुराई दोनों को साथी मसीही लोगों के साथ *बांटना* आवश्यक है।

चाहे संदर्भ यह संकेत देता है कि आयत 15 मुख्य रूप से परमेश्वर की संतान के साथ हमारे सम्बन्ध की बात करती है, परन्तु इस वचन की व्यापक प्रासंगिकता हो सकती है। मसीही व्यक्ति को उन लोगों के जीवनों में दिलचस्पी होनी चाहिए जिनके सम्पर्क में वह आता है, वे सब जिन्हें वह भलाई के लिए प्रभावित करने की आशा रखता है। ऐसा वह इसलिए करता है क्योंकि यह करना सही है, परन्तु कई बार इसका अतिरिक्त लाभ मिल जाता है: लोग आम तौर पर अपने जीवनों के नाटकीय पलों में जो मुस्कराहट या आंसू लाने वाली घटनाएं होती हैं, सुसमाचार को सब से अधिक मानते हैं।

मैं आयत 15 में पौलुस के निर्देशों को चुनौतीपूर्ण बनाता हूं। जब लगे कि आपके साथ सब कुछ बुरा ही हो रहा है तो किसी दूसरे के साथ भला होने पर कैसा लगेगा?[7] क्या आप उसके साथ आनन्द कर पाएंगे? यदि कोई आपके साथ दुर्व्यवहार कर रहा है और उसके जीवन में अचानक दुख आ गया है तो क्या होगा? क्या आप उसके साथ रो सकते हैं, या आप को लगता है, ''उसे अपने किए का फल मिल गया''? कोई विरोध कर सकता है, ''आप ने जिन परिस्थितियों का विवरण दिया है उनमें एक दूसरे के साथ आनन्द करना या रोना अस्वाभाविक है।'' यह सही है। यह अस्वाभाविक *है,* परन्तु मसीही लोगों को परमेश्वर की सहायता से शरीर की प्राकृतिक अभिलाषाओं से ऊपर उठने की चुनौती मिली है।

मसीही व्यक्ति किसी के साथ भी गा या कष्ट सह सकता है। मसीही व्यक्ति सहानुभूति करने वाला होता है।

मसीही व्यक्ति दीन होता है (12:16)

आयत 16 में पौलुस ने उन्हें सम्बोधित किया जो अपने आपको दूसरों से इसलिए बेहतर

समझते थे कि उनके पास अधिक सम्पत्ति या शक्ति थी, क्योंकि उन में दूसरों से अधिक गुण या पढ़ाई थी, या कई और कारण हो सकते हैं। हम भी इस वचन को उन पर लागू कर सकते हैं जो कलीसिया के दूसरे सदस्यों से ऊंचा समझते हैं क्योंकि वे पुराने मसीही हैं, उन्हें बाइबल का अधिक ज्ञान है, कलीसिया के काम में अधिक सक्रिय हैं, उनके जीवन अधिक धार्मिक हैं आदि।

व्यवहार

पौलुस ने आरम्भ किया, ''आपस में एक सा मन रखो'' (आयत 16क)। एक और जगह ''एक सा मन'' रखने की चुनौती का अर्थ अपने विश्वास और शिक्षा में एक होना है (1 कुरिन्थियों 1:10)। यहां इसका अर्थ यह लगता है, ''हर किसी के साथ एक सा व्यवहार करो; रेवड़ियां न बांटें।'' JB में है, ''हर किसी के साथ सम्मान और दयालुता से व्यवहार करें।''

संगति

वचन आगे कहता है, ''अभिमानी न हो;[8] परन्तु दीनों के साथ संगति रखो; अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो'' (रोमियों 12:16ख)। पौलुस के समय में भी धार्मिक कट्टरता वैसे ही थी जैसे आज पाई जाती है। याकूब ने दिखाया कि किस प्रकार से कलीसिया की सभा में धनवान और निर्धन के साथ अलग-अलग व्यवहार किया जा सकता है (देखें याकूब 2:1-9)। मैले कुचैले, फटे पुराने कपड़े पहने किसी निर्धन के समृद्ध कलीयिसा की आराधना सेवा में जाने की कहानी बताई जाती है। वह किसी स्त्री के पास बैठ गया जिसके कपड़े और मोती उसकी सम्पत्ति का विज्ञापन कर रहे थे। स्त्री जितना हो सका उस व्यक्ति से दूर हट गई। जब एक सेवादार उसके पास आया तो उसने ज़ोर से उसके कानों में कहा, ''क्या तुम्हें भी वैसे गंध आ रही है जैसी मुझे आ रही है?'' सेवादार ने हवा में सूंघा और फिर कहा, ''हां मुझे लगता है कि यह आत्माभिमान की गंध है।''

मसीहियत बहुत बड़ा समकारी है (गलातियों 3:28)। मसीह वर्ग भेदों या जाति प्रबन्ध को नहीं मानता। जब मैं अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज (अब यूनिवर्सिटी) में था तो उस समय कॉलेज के प्रेजिडेंट कॉलेज चर्च ऑफ़ क्राइस्ट के ऐल्डर थे। ऐसा ही कॉलेज का एक सेवक था। जब दोनों ऐल्डरों की मीटिंगों में इकट्ठे बैठते तो एक का विचार दूसरे के विचार जितना ही महत्वपूर्ण होता था।

पौलुस के समय की परिस्थिति में वापस आएं, तो अधिकतर मण्डलियों में निर्धन सदस्यों का प्रतिशत अधिक होगा (1 कुरिन्थियों 1:26-28)। इसके अलावा मालिक और गुलाम दोनों ही मसीही बनते थे (देखें इफिसियों 6:5-9)। क्या आप पहली बार मालिक और उसके गुलाम के आराधना सभा में एक दूसरे के पास बैठकर इकट्ठे प्रभु भोज में भाग लेने पर दोनों के भावनात्मक परिवर्तन के अनुभव की कल्पना कर सकते हैं?

सब लोगों के प्रति मसीही लोगों की तरह कार्य करने में परमेश्वर हमारी सहायता करे। लगभग हर मण्डली में कम से कम एक व्यक्ति तो होता ही है जिसे लगता है कि जैसे वह उनका न हो, या पीड़ादायक ढंग से लजाता है। मसीही व्यक्ति ऐसे लोगों को ढूंढ़ता है, उनके पास जाता है, उनकी सहायता करता है, और स्वीकृति और प्रेम व्यक्त करता है।

आयत 16 के इस भाग को छोड़ने से पहले मुझे बताना चाहिए कि कुछ लोगों को लगता है

कि ''दीनों'' का अर्थ ''दीन [लोगों]'' के बजाय ''दीन [वस्तुओं]'' है। TEV में है ''विनम्र कर्त्तव्य।'' NIV में यह टिप्पणी है ''या *घरेलू* काम करने को तैयार।'' पौलुस यह कहना चाहता था या नहीं परन्तु यह सच्चाई विचार के योग्य है। हमें यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि हम ''इतने अच्छे'' हैं कि घरेलू काम नहीं कर सकते। यीशु ने अपने चेलों के पांव धोकर एक गुलाम वाला काम ही किया था (यूहन्ना 13:5-17)। पौलुस आम तौर पर अपने हाथों से काम करके गुज़ारा करता था (1 कुरिन्थियों 4:12; प्रेरितों 18:3)। पूरे संसार में ऐसे मसीही लोग हैं जो सप्ताह भर कथित ''सेक्युलर जॉब'' करते हैं ताकि वे रविवार के दिन मसीह का सुसमाचार सुना सकें।

ताड़ना

पौलुस ने रोमियों 12:16 को इस ताड़ना से समाप्त किया: ''अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो'' (आयत 16ग; देखें नीतिवचन 3:7)। क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो इस तरह काम करता हो जैसे उसे ''सब कुछ पता'' हो? विषय चाहे जो भी हो, वह सब को यह विश्वास दिलाने की कोशिश करता है कि उस विषय पर उसका ''अधिकार'' है। हम आम तौर पर ऐसे लोगों से दूर रहने की कोशिश करते हैं। लियोन मौरिस ने लिखा है, ''अपनी नज़र में समझदार व्यक्ति दूसरों की नज़र में बहुत कम समझदार होता है।''[9] परन्तु पौलुस का उद्देश्य हमारे लिए दूसरों पर उंगली उठाना नहीं बल्कि अपनी परख करना है। हम बाइबली अर्थ में बुद्धि की बात करें या ''पुरानी स्पष्ट सामान्य ज्ञान'' के अर्थ में, जो सचमुच में बद्धिमान होते हैं उन्हें इस बात का पता होता है कि बहुत सी बातें हैं जो उन्हें पता नहीं है और कई बातों की उन्हें समझ नहीं है।

''मसीही व्यक्ति कैसा लगता है''? वह *दीन* होता है। वह चाहे अन्य मसीही लोगों के साथ व्यवहार कर रहा हो या संसार के दूसरे लोगों के साथ। वह हर किसी का सम्मान करता और उसे स्वीकार करता है और कभी यह प्रभाव छोड़ने की कोशिश नहीं करता कि वह दूसरे किसी व्यक्ति से बेहतर है। जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने कहा है, ''घमण्ड की कुछ किस्में धम्भ से भी बुरी हैं।''[10]

शायद मुझे इसमें एक नकारने वाली बात जोड़ देनी चाहिए। ''ग्रहण करने का अर्थ स्वीकृति नहीं है।''[11] हम दूसरों को उनके विश्वासों तथा जीवन शैलियों को स्वीकार किए बना उनका सम्मान कर सकते हैं। यीशु ''पापियों का मित्र'' था (मत्ती 11:19), परन्तु उसकी चुनौती थी ''फिर पाप न करना'' (यूहन्ना 8:11)।

आइए एक और प्रासंगिकता पर विचार करते हैं। पौलुस ने विशेष रूप से उन लोगों की बात की जिसे हम ''उच्च वर्ग'' कह सकते हैं, परन्तु मेरा अनुभव यह रहा है कि रोमियों 12:16 का संदेश *सब* लोगों की आवश्यकता है, चाहे वे जीवन के किसी भी स्थान पर क्यों न हों। मैंने उन्हें जिनके पास कम पैसे होते हैं उनसे निराश होने की बातें सुनी हैं जिनके पास धन होता है। मैंने कम पढ़े लिखों को बड़ी-बड़ी डिग्रियों वाले लोगों का मज़ाक उड़ाते सुना है। मन के अन्दर यह सोचने की इच्छा है कि हम *किसी* कारण दूसरों से बेहतर हैं: जहां हम रहते हैं उसके कारण, हमारी त्वचा के रंग के कारण, राजनैतिक सम्बन्धों के कारण, आप इस में और जोड़ सकते हैं। मसीही व्यक्ति के लिए ऐसी बातों का कोई महत्व नही है। वह सब लोगों से प्रेम करता है और वह विनम्र है।

सारांश

हमने रोमियों 12:9-16 के लिए दो पाठ दिए हैं। ये आयतें यह स्पष्ट कर देती हैं कि मसीह चाहता है कि हम संसार से अलग जीवन बिताएं। वह सब मसीही लोगों से प्रेम करने वाले, नि:स्वार्थ, जोशीले, दृढ़, सहायक, अनुग्रहकारी, सहानुभूति रखने वालों और विनम्र होने के लिए कहता है। मुझे आशा है कि आप इसे अपने ऊपर लागू कर रहे हैं: ''क्या लोगों ने मुझ में 'मसीही व्यक्ति कैसा दिखता है' देखा है?''

रोमियों 12:9-16 में प्रभु ने हमें संसार के नमूने और मानदण्डों से ऊपर जीवन बिताने की चुनौती दी है। उसने कहा है कि हम उसकी सहायता से ऐसा कर *सकते* हैं। क्या हम मसीही लोगों के रूप में रहने की चुनौती को स्वीकार करके वैसा जीवन बिताना स्वीकार करेंगे या हम पौलुस की बातों को अपने जीवनों को बदलने की अनुमति दिए बगैर सुनेंगे।

प्रचारकों तथा सिखाने वालों के लिए नोट्स

जब आप इस प्रवचन को सुनाएं तो आप अपने सुनने वालों को बताएं कि वे कैसे मसीही बन सकते हैं (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38)। इसके साथ ही यह भी बताएं कि भटके हुए मसीही फिर से मसीही के रूप में बहाल होकर कैसे जीवन आरम्भ कर सकते हैं (प्रेरितों 8:22; 1 यूहन्ना 1:9)। ''प्रेम करने की चुनौती (12:9-13)'' पाठ की तरह मैंने आयत के अनुसार एक मुख्य शीर्षक का ही इस्तेमाल किया है; परन्तु आप आयत 3 से कई मुख्य शीर्षक बना सकते हैं।

टिप्पणियां

[1]यदि आप रोमियों 12:9-16 को एक ही अध्ययन में बताने का निर्णय लेते हैं और इस पाठ का शीर्षक इस्तेमाल करते हैं, तो यह विशेषण आपके मुख्य शीर्षक हो सकते हैं-प्रत्येक आयत के लिए एक। हमने पहले ''प्रेम करने की चुनौती (12:9-13)'' में प्रेम की पांच विशेषताएं देखी थीं। [2]आर. सी. बेल्ल, *स्टडीज़ इन रोमन्स* (आस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1957), 138. [3]''तुम्हें'' के लिए यूनानी शब्द कई प्राचीन हस्तलेखों में से निकाला गया है, जिस कारण कुछ टीकाकार सुझाव देते हैं कि पौलुस की ताड़ना सामान्य रूप में सताने वालों पर लागू होती है। [4]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोजिस्टरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 69 से लिया गया। [5]ऐसी भाषा की हर जगह निंदा होती है। उदाहरण के लिए कुलुस्सियों 3:8 ''गाली-गलौज वाली भाषा'' (''अश्लील वार्तालाप''; KJV) की निंदा करती है। [6]लूक हार्टमन, ''गॉड'स कॉल टू लव,'' ईस्टसाइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी, ओक्लाहोमा, 17 जुलाई 2005 को दिया गया प्रवचन। [7]अपने इलाके से मेल खाते उदाहरण जोड़ लें, जैसे ''उसे वह पहचान मिल गई जो तुम्हें मिलनी चाहिए थी।'' [8]''अभिमानी'' का अनुवाद ''ऊंचा'' (*hupselos*) के लिए विशेषण से किया गया है। यूनानी भाषा के मूल शब्द ''ऊंची [बातों] पर मन न लगाओ'' (देखें KJV), जिसमें ''बातों'' शब्द जोड़ा गया है। LB के अनुवाद में ''महत्वपूर्ण लोगों की नज़र में आने की कोशिश न करें बल्कि साधारण लोगों की संगति का आनन्द लें।'' [9]लियोन मौरिस, *ए एपिस्टल टू दि रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 451. [10]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टाट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रेस, 1994), 333.

[11]रिचर्ड ए. बेटे, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू द रोमन्स,* दि लिविंग वर्ड कमैंट्री (ऑस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1969), 155.